

निमः शुद्ध शुद्ध वरा

दशपिंथ यविधि

१६८१

१ वंद्यादभयिलुथयक्रुसक्रुनधूनकविधि॥ ॥
नकसङ्गव१ निक्रुक्रुङ्गव१ ध्वक्रुक्रुङ्गव१ यक्रुक्रु
ङ्गव१ दाक्रुक्रुङ्गव३ षक्रुक्रुङ्गव१ जगक्रुक्रुङ्गव
२ ॥ ॥ हृद नमः श्रीवज्रसत्वाय ॥ दभयिलुथः

यविधिमाह ॥ इवास्ति ॥ चाननं गन्धर्वि नंगडा ॥
 चै नरुना दशाचक ॥ इडायाजवस इद्रुस निमिना
 नृस्वडासुर्लद्वसनीमनागः ध्वनिस्त्रायनयायुधः
 नद्रुयां सुवीमनासुः कननं क ॥ ॥ इवजगड

न्यासत्रयं जलपात्रं मिदं यथा कुरु नमः ॥
लक्ष्मिस्तुतिं नमः ॥ इदं धियागमिदं
मासयुक्तं नमः ॥ इदं नमः ॥
धनं लिखेत्तु वा उक्तं कुरु नमः ॥ इदं महात्म

मा नाथिय किं दुर्जनिय चिच्छानं चेत्यहं दानकं
यं मासयुक्तं नमः ॥ धनं लीला नयाय ॥ इदं महा
मा नाथिय किं दुर्जनिय चिच्छानं चेत्यहं दान
कवजोपकं स्वाहा ॥ धनं देवलाहा किं नथियं

ॐ ॥ वाक् ॥ ॐ नमो रोग वरं वेत्राचनयु रकं तु गङ्गा
यस्तु थागगाया इह न संस्य वृद्धयि ॥ गङ्गाया ॥ ॐ सुम्य २
समय २ सान् २ दान् २ ज्ञय स्मा गाय, नीजा वं व निजा
कृत्वा निवानं जसव गि मदा गङ्गा सर्ववृद्धानां धिष्ठि ग न

मस्वाहा ॥ यन धन क स्मिन् ॥ ॐ वृं जं जिं वं ॥ इह ग ॥ ॐ गं
जं वं वं ॥ यथा हि जागमात्यन लादि ॥ च ग सिधु जडा
म स्वाननयके ॥ वाक् ॥ यथ ॥ ॐ मदा धम गाना धिय गि म
वृद्धि गि य नि ॥ यन चेत्य र हान क च द न सिधु न ह य

ॐ स्वाहा ॥ देवराशुकोवाक्येयकाय ॥ रुल सुनने
वेद ध्रुय दियादी सकल गायोवाक्येय ॥ ॥ धन
नी ॥ जम धन संयुजायाय दूद गस्ये ये लसदायक ॥ वाक
थ ॥ यमया भविभा धर्याय यमयनु निहयग ॥ यमदा

नं विनिर्मुक्तं गालिमां भल हा ४ गुर्यं ॥ धंली ॥ किनन के
॥ डं मुं रमदा मुनय स्वाहा ॥ डं नभार गवग सर्व इन्
गिय विष्णु धन न जाय न था ग नाया इक सम्य कं वृद्ध
य ॥ नश था ॥ डं विष्णु धन र विष्णु धन र सर्वयाय विष्णु

धनं सुखं विमलं दिवं गङ्गां भूम्भूक नाम (अथ) याय स
विक्रमाव न हविषा धनं स्वधा ॥ इ न माय ४ धर्म ना
जाय गुह्यं रुढि कर्म कर्म मर्ग जय रास्व नं सुधिया
यस्य ४ गङ्गा मा चया मिह न न ग्या ॥ दधि (न) मदि

वात्रुं कुरुवर्णं विप्रमं दल्लुल्लं महाया चंयु गाधि
य निमलाधिकं रावयत्स नर्ग निर्य धर्म ना ज न म मु क ॥
धन द वया ह्म नय निमान् (थं) वा क स्व गु नी चाय ३ ॥
धन का क यि गु स्वान यि गु नि धय क् कृष्ण वय न् ग य

कं ॥ अश्वयुषानयिना जूम्कनाम आयाय युथमभिल
संसिद्धं थं का कयिष्ठाय स्नानयिष्ठाय कृष्णमनमूयनि
स्तिगां ॥ लयनं तय ॥ यनामनं संयुक्तमिच्छा ॥ लह्वनः
दायकं ॥ अश्वयुषानयिना जूम्कनाम आयाय युथमभिल

कं ॥ वसुधायिष्ठाय कृष्णमनमूयनि
गस्यं जाङ्गायकं जाङ्गायकं ॥ अश्वयुषानयिना
जूम्कनाम आयाय युथमभिल
कयिष्ठं स्व ॥ स्नानयिष्ठाय कृष्णमनमूयनि
॥ अश्वयुषानयिना जूम्कनाम आयाय युथमभिल

यगयिनुथयक विष्णुव ३ काकयिनु स्वानयिनु य
गयिनु सुधां निगंथु निवाथयक मान ॥ यगयिनुथय
कयार ॥ कुम्भत्रय पवित्रमहंग ॥ इयगां सही स्वधा ॥
लंघनदाय ॥ इयगां सही यगियद स्वधा ॥ लादागनंथि

यक ॥ इवसूधनीयगियागय स्वधा ॥ जाग्वत्त धेनक
किदासुगस्य जाज्ञानक जाग्वत्त जा नक वाक् ॥ अयय
षागयिगा अमूकनाम श्रयाय यथमंघि नमूद्विर्मसिध
यगयिनु स्वधा ॥ १ ॥ निद्रया ॥ अयत्यादि अमूकना

मञ्जयायद्विगीयचक्रवर्तवसंसिद्धिद्विगीययिष्ठं
स्वधा॥ २ ॥ हृगीयनासिकासंसिद्धिद्विगीययिष्ठं स्व
धा॥ ३ ॥ चतुर्थल्लगसंसिद्धिचतुर्थयिष्ठं स्वधा॥
४ ॥ यश्चमहदयसंसिद्धिचतुर्थयिष्ठं स्वधा॥ ५ ॥

षष्ठमहसंसिद्धिचतुर्थयिष्ठं स्वधा॥ ६ ॥ सप्तमना
संसिद्धिचतुर्थयिष्ठं स्वधा॥ ७ ॥ अष्टमनेन्द्रियसं
सिद्धिचतुर्थयिष्ठं स्वधा॥ ८ ॥ नवमयादसंसिद्धिचतु
र्थयिष्ठं स्वधा॥ ९ ॥ दशमलामसंसिद्धिचतुर्थयिष्ठं

दशमयिष्ठं स्वधा ॥ १० ॥ वाक्कायजिह्वायां उल्लिख्य
शयूष्मानं गङ्गाडाकायमाल ॥ काकयिष्ठं स्थानयिष्ठं जि
ह्वामाल ॥ दशमलक्ष्मालं ह्य इह सुकतां थूस्थं विनविधि
थं ॥ दशमलक्ष्मालं ह्यसंगयाडा कायलालं ह्यविय ॥ वाक्का

थं ॥ यथमसिन्धुमूत्रिसंस्थिं यिष्ठं निलादकं गम्भी
स्वधा ३ ॥ मलजाणां धनयक ॥ चित्तं सिद्धं जजमस्या
न रुच्यं रुच्यं मूत्रादि मधिमरा ननक ॥ वाक्कायमनज
ग्राथं दिनयनिष्ठं माल नाय शूक ननहायक ॥ दश

महायक ॥ मल्लिथिजक स्नानननक ॥ ३० नरमदा ॥
मूनयस्वदा ॥ मानका गोपयाय ॥ तिलाइत्ययनमूत्रि ॥
मयूत्रमग्वहृषा ॥ मधुचनाशिकावाहं ॥ जीजाकस्मयः ॥
युतादनं ॥ दधिचकटिजान्स्यांतायनहस्तयादया ॥

अनादौ सर्वगमश्च जायते वर्द्धनीश्च वानराय नय
नाजलिविना अयं काय जायते सर्वसत्त्वाद्यादि
वायुनलीकू गोलामल न्याडागाहायानं स्वयाकदू
यके ॥ एवमिह एवमहाद्यानाद्यादि वाविसर्जनम्

हृन्नावल्यादि॥ आदनरत्यादि॥ दण्डविज्ञाचक॥
युगयिलुंगरुधं, काकयिलुंस्नानयिलुंगरुधं
स्वध॥ ठाचक॥ चयककाय॥ यापदभनायनय॥
मावह्ययक॥ यिलुथयाथसरि नहायक, यंचवि

दिनहायक॥ काकयिलुंयुदानन, कायगृद्धिचदकुना
निस्रुस्रुनाचवगमाकाकयिलुं संयुद्धामिस्वध
स्नानयिलुंयुदानन, धर्ममाद्धयदभग, गस्यास्नानयिलुं
संयुद्धामिस्वध॥ युगभनीयमाचनार, दभयिलुंयुका

